इस बार मीका के सूरों पर बजेगा दानह का तारपा

■ 26 दिसंबर को मीका की धमाल के साथ शुरु हो रहा तारपा महोत्सव ■ 28 दिसंबर को ग्रैंड फिनाले के साथ हो जायेगा समाप्त

सिलवासा 23 नवंबर, (असली आजादी संवाददाता)। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली में 70 के दशक से शुरु हुआ तारपा महोत्सव दानह की आजादी के बाद अपने आपमें इस प्रदेश के इतिहास और संस्कृति की कडी को संजोते आ रहा है। कभी दादरा नगर हवेली की आदिवासी संस्कृति को दुनिया तक पहुँचाने के उद्देश्य से शुरु हुआ तारपा महोत्सव अब अपनी पहचान से भटकता हुआ देश की हर संस्कृतियों की तरह ही यह भी बॉलीवुड पर ही जाकर समाप्त हो गया। क्योंकि तारपा महोत्सव के आयोजकों को इसके आयोजन के उद्देश्यों को लेकर समय-समय पर इसमें व्यापक बदलाव करते गये और आदिवासी संस्कृति को दुनियाँ तक पहुँचाने के उद्देश्य को भूलाकर इस महोत्सव को प्रदेश के पर्यटन प्रचार से जोड दिया गया। जिसके बाद 2000 के दशक से ही इस महोत्सव की दिशा और दशा ही बदल गई और यह कार्यक्रम पूरी तरह से बालीवुड के कार्यक्रम का हिस्सा हो गया। अब तारपा के महोत्सवों से प्रदेश के पर्यटन के प्रचार-प्रसार की गाडी कहां तक पहुँची यह तो विभाग के लोग ही बता सकते है। लेकिन कभी शरीर काली बंडी और धोती एवं सिर पर सफेद टोपी पहने हुए आदिवासी हाँथों में तारपा लेकर जब महोत्सव स्थल पर पहुँचते थे हजारों वर्षों की आदिवासी संस्कृति लोगों के नजरों के सामने जीवंत हो उठती थी। बदलते समय और तारपा महोत्सव के आयोजकों के मिजाज ने आदिवासी संस्कृति पर आधारित इस महोत्सव को पूरी तरह से बदल दिया। पिछले कुछ वर्षों की तरह इस वर्ष भी दिसंबर महीने में तारपा महोत्सव का आयोजन स्थानीय प्रशासन द्वारा किया जा रहा है। 26 दिसंबर को मशहूर पंजाबी और बालीवुड गायक मीका के धमाल के साथ शुरु होने जा रहा यह महोत्सव 28 दिसंबर को शिवानी कश्यक के गीतों के साथ समाप्त हो जायेगा।

संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली में 70 के दशक से शुरु हो रहा तारपा महोत्सव के इतिहास पर नजर दौडायी जाय तो यह आदिवासी संस्कृति के उदय के साथ से ही जुडा हुआ है। हजारों वर्षों से समूह में तारपा बजाने तथा इसे एक जश्न के रुप में मनाने की परम्परा रही है। दादरा नगर हवेली के अलावा आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले विभिन्न आदिवासी समुदाय के लोग मुख्यत : धोडिया, वारली, कोंकणी, कोथोडी और दुबला जनजातियों में भी तारपा बजाकर अपने आराध्य देव को खुश करने के साथ-साथ खुशी मनाने की परम्परा रही है। दिसंबर महीने में शरद ऋतु और वसंत ऋतु के बीच उस समय मनाया जाता था जब आदिवासी किसान फसल को काटकर अपने घरों में लाते है तो अपने आराध्य देव के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिए समूह में तारपा बजाकर एवं नृत्य कर इस जश्न को मनाते आ रहे है। दादरा नगर हवेली में इस सांस्कृतिक धरोहर को एक राष्ट्रीय पहचान देने के लिए 70 के दशक में प्रशासन द्वारा वसंत महोत्सव के नाम से प्रदेश स्तरीय समारोह का आयोजन किया जाने लगा। जिसके आयोजन का मुख्य उद्देश्य आदिवासी संस्कृति को लोगों के सामने लाना लेकिन 80 के दशक से इसे तारपा महोत्सव का नाम दे दिया गया और 90 के दशक के आते-आते इस महोत्सव पर पूरी तरह से बाजारवाद हावी हो गया। तारपा महोत्सव में तारपा, डांस, ढोल डांस, तोर थाली नृत्य, घेरिया नृत्य तथा डांगी नृत्य की जगह बालीवुड के ठूमके दिखने लगे और इस आदिवासी सांस्कृतिक महोत्सव को प्रदेश के पर्यटन विकास से जोड दिया गया जो अभी तक निरंतर कायम है। पर्यटन विभाग से मिली जानकारी के अनुसार, इस वर्ष 26 दिसंबर से शुरु हो रहे तारपा महोत्सव में पहले ही दिन पंजाबी सिंगर मीका सिंह अपनी धमाल पेश करेगें। इसके अलावा अन्य कार्यक्रमों के

अलावा 28 दिसंबर को ग्रैंड फिनाले में शिवानी कश्यप के गीतों के साथ इस आदिवासी तारपा महोत्सव का समापन हो जायेगा।